P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-11* July- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

पाठ्यक्रम में शान्ति शिक्षा की प्रासंगिकता

मनोज कुमार सिंह
शोध छात्र,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय वि0 वि0,
सागर, म0 प्र0

सारांश

मानव एक शान्ति प्रिय प्राणी है। परन्तु मानव की यह शान्ति प्रियता आज लालशा ने अशान्त बना दिया है। जिससे वह अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हिंसा पर उतर आया है। ऐसी हिंसा एक बच्चे से लेकर आयु लगभग पूरी कर चुके बुजुर्ग में घर कर गयी है। आज यह महसूस किया जा रहा है कि इस बढ़ती हिंसा को रोकने के लिए पाठ्यक्रम में शान्ति शिक्षा को शामिल करक दूर किया जा सकता है। जिसकी शुरूवात प्राथमिक स्तर से लेकर उच्चस्तर के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना प्रासंगिक है। जिसके लिए विभिन्न आयोगों ने शान्ति शिक्षा के विभिन्न पहलुओं को पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए सुझाव भी दिये है। शान्ति शिक्षा की प्रासंगिकता को देखते हुये पाठ्यक्रम में शान्ति शिक्षा को सम्मिलित किये जाने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में भी जिक्र किया गया है। इसी प्रकार पाठ्यक्रम में शान्ति शिक्षा को उचित स्थान मिलने से बढ़ रही अशान्ति, हिंसा, अपराध आदि समस्याओं से निजात पाया जा सकता है।

मुख्य शब्द : पाठ्यक्रम, शान्ति शिक्षा

प्रस्तावना

जीवन एक कला है और कला स्वयमेव नहीं आती, इसे सीखना पड़ता है तथा सतत अभ्यास करना पड़ता है। जीने के लिए शान्ति आवश्यक है और शान्ति बनाए रखने के लिए धैर्य तथा आत्मसंयम। मानव–जीवन में तमाम अनुभव आते है और जो इन अनुभवों से सबक ग्रहण करता है, वह प्रगति करता है और शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व के साथ जीवन जी पाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

शान्ति शिक्षा को पाठ्यक्रम में स्थान दिये जाने की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन

पलड़िया, श्रीमती भावना (2010) ने शान्ति के लिए शिक्षा का स्वरूप, आवश्यकता एवं व्यवहारिकता का विवेचनात्मक अध्ययन किया। जिनका उद्देश्य वर्तमान में शान्ति शिक्षा की आवश्यकता तथा व्यावहारिकता का अध्ययन करना रहा। अपने शोध में न्यादर्श के रूप में इन्होंने हल्द्वानी, नैनीताल, अल्मोड़ा तथा रूद्रपुर के अभिभावकों, अध्यापकों व विद्यार्थियों का चयन किया। विश्लेषणात्मक विधि के आधार पर अपने निष्कर्ष में पाया कि ऐसी शिक्षा जो स्वंय के साथ–साथ परिवार के सदस्यों को भी संतुष्ट कर सकें, आत्मिक शान्ति की अनुभूति करा सके और अशोषित, अहिंसक व न्यायप्रिय समाज की स्थापना कर सकें, शान्ति शिक्षा कहलती है। शोध के आधार पर बताया कि योग, संस्कृति की शिक्षा, मूल्यों की शिक्षा, गोष्ठियाँ, कार्यशाला, शान्ति पर कला प्रतियोगिता, सांस्कृतिक कार्यक्रम, शान्ति दिवस मानकर, शान्ति संगठन की स्थापना इत्यादि से शान्ति का विकास कर सकते है। पाठ्यक्रम में महापुरूषों जैसे महात्मा गाँधी के सत्य व अहिंसा के विचार, विवेकानन्द के विश्व बन्धुत्व व विभिन्न धर्मो में समाहित शान्ति मन्त्रों को शामिल करने की बात कही। इस प्रकार से शान्ति शिक्षा के द्वारा विश्व में शान्ति की स्थापना की जा सकती है।

नृपेन्द्र, बीर सिंह व रेनु राय (2010) द्वारा ''भारतीय परिप्रेक्ष्य में शान्ति शिक्षा का स्वरूप'' विषय पर शोध पत्र लिखा, जिसमें बताया कि, जहाँ एक ओर आवाम शिक्षित हो रही है वहीं दूसरी ओर अशान्ति बढ़ रही है। जिसे हम समाज में देख रहें हैं। ऐसी शिक्षा हमारे किस काम कि जो मानव को दानव बना रही है। इसके लिए शोध पत्र में शान्ति शिक्षा की बात कही गयी है। जिसको पाठ्यक्रम में शामिल करके लोगों के हृदय में प्रेम, सहानुभूति, दया भाव जागृत किया जा सकता है। इसके लिए शोध पत्र द्वारा शान्ति शिक्षा को पाठ्यक्रम में प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च स्तर तक समाहित करने की वकालत की है। शान्ति शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयासों को भी

उजागर शोध पत्र में किया है। इस प्रकार से शोध पत्र में यह बताने का प्रयास किया गया है कि शान्ति शिक्षा द्वारा शान्ति कायम की जा सकती है।

हर मनुष्य में कोई–न–कोई खासियत होती है और अपनी इसी खासियत या जीवन के प्रति अपनी अवधारणा के कारण वह जी पाता है। यह अवधारणा एक बच्चे में भी होती है और अपनी आयु लगभग पूरी कर चुके एक बुजुर्ग में भी। बस इसे समझने की आवश्यकता है।[1] परन्तु मानव की लालसा जो कभी तृप्त न होने वाली है सदैव एक की प्राप्ति के पश्चात् दूसरी सामने आ जाती है। जब व्यक्ति की लालसा औचित्य ढ़ग से पूर्ण नहीं हो पाती तो उसे प्राप्त करने के लिए अनेक उपाय ढूढ़ने लगता है। यह उपाय कभी–कभी हिंसक भी हो जाती है। जब व्यक्ति हिंसा, छल–कपट द्वारा लालसा तृप्त करने लगता है तो उसकी धीरे–धीरे आदत सी बन जाती है और वह प्रायः इसका आदि सा हो जाता है। व्यक्ति के इस हिंसक स्वभाव का दूसरे व्यक्तियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है और समाज में धीरे–धीरे अव्यवस्था सी फैलने लगती है। जिससे समाज की संरचना विघटित होने लगती है और व्यक्तियों में मूल्य, अहिंसात्मक व्यवहार, दूसरे के प्रति प्रेम में गिरावट आने लगती है। जिससे समाज में अनेक कुरीतियाँ पनपने लगती है। वैश्वीकरण के इस दौर में विकास की गति तीव्रता पकड़ चुकी है। विश्व जैसा कि हम जानतें हैं, तेजी से एक वैश्विक ग्राम के रूप में परिवर्तित हो रहा है। विकास के निरन्तर बढ़ते चरणों में संघर्ष, विवाद, मनमुटाव, मतभेद और टकराव भी बड़ी संख्या में बढ़ रहें है।[2] ऐसा नहीं कि संघर्ष, विवाद, मन मुटाव, मतभेद और टकराव आज ही पनफी है, यह तो प्राचीन समय से चली आ रही है। परन्तु इसका स्वरूप आज विकराल रूप लेता जा रहा है। इसी का एक स्वरूप आतंकवाद भी है जो आज एक गंभीर समस्या बनी हुई है। ऐसा नही है कि आतंकवाद से युद्धों की अपेक्षा अधिक लोग मारे जा रहें हैं लेकिन इससे उत्पन्न भय और अशान्ति ने मानव के अस्तित्व को ही हिला कर रख दिया है। आतंकवाद एक मर्यादाविहीन युद्ध है। महाभारत काल में सूर्यास्त के बाद शत्रु के शिविरों में आना जाना निरापद होता था। आज भी युद्ध प्रारम्भ करने के पहले सूचना दी जाती है। रेडक्रॉस की गाड़ियों एवं अस्पतालों के साथ–साथ नागरिक वस्तियों पर हमले युद्ध मर्यादा के विरूद्ध माना जाता है, लेकिन आतंकवाद का इस संम्बध में शायद कोई मानदंड नहीं है।[3] 11 सितम्बर 2001 को संयुक्त राज्य अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर (World Trade Centre) एवं रक्षा विभाग पेंटागन पर तथा 13 दिसम्बर 2001 को भारतीय संसद पर किये गए आतंकवादी हमलों ने मानवता की 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' की मान्यता पर गहरा आधात किया है, जिससे सम्पूर्ण मानवता कराह उठी है।[4] इस वसुन्धरा पर मानव सर्वश्रेष्ठ प्राणी है परन्तु प्रथम विश्व युद्ध (1 अगस्त 1914–11 नवम्बर 1918) तथा द्वितीय विश्व युद्ध (1 सितम्बर 1939 ई0 2 सितम्बर 1945 ई0) में करोड़ों लोगों का मारा जाना कहाँ की श्रेष्ठता है। वास्तव में श्रेष्ठता तो इसमें है कि मानव–मानव के लिए जिये। सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में समझे। मानव में जब तक मानवीयता व्याप्त है वह मानव है अन्यथा उसे पशु के श्रेणी में कहना अतिश्योक्ति न होगी। जब गाँधी जी ने सुना कि परमाणु बम ने हिरोशिमा को मिटा दिया तो उन्होंने कहा–'' अब यदि विश्व अहिंसा को नहीं अपना लेता, तो यह मानवता के लिए एक निश्चित आत्महत्या के समान होगा। सत्य और अहिंसा परमाणु बम से अधिक शक्तिशाली हैं तथा अहिंसा ही परमाणु बम का एक मात्र विष–नाशक है और एक मात्र रास्ता है जिससे घृणा का विलय हो सकता है और विवादों को निपटाया जा सकता है।[5] विश्व व समाज में बढ़ रही ऐसी अराजकता, हिंसा, तनाव, द्वन्द से आज मानव दुःखी है चूंकि मानव एक शान्ति प्रिय प्राणी है। मानव जीवन में संभवतः सर्वाधिक अपेक्षित वस्तु है–शान्ति। शान्ति मानव के अन्दर व बाहर होनी चाहिए तभी वह वास्तविक सुख का अनुभव कर सकेगा। परन्तु वर्तमान की स्थिति से मानव ऊब चुका है। आधुनिक युग में प्रत्येक व्यक्ति आगे बढ़ने की होड़ में लगा हुआ है। मानव विकास करते हुए आगे बढ़ता जा रहा है, और अपने अस्तित्व को भूलता जा रहा है। मानव भौतिक वस्तुओं का संग्रह कर भोग विलासिता में लिप्त होता जा रहा है। जहाँ मानव सामाजिक प्राणी के रूप में एक दूसरे के दर्द को महसूस कर रहा था, आज मानव इन सब से नीचे गिरता जा रहा है। मानव अपने मूल्यों, आदर्शों, संस्कृतियों को भूलता जा रहा है। उसके अन्दर छल–कपट व अपना भला करने तथा दूसरे से आगे बढ़ने में लगा है। इस भौतिकतावदी समय में मानव की मानवीयता का लोप हो रहा है और धीरे–धीरे मानवीय प्रवृत्ति दानवीय रूप लेती जा रही है। मानव अपने लोभ की प्रवृत्ति को प्रबल करता जा रहा है, और हिंसात्मक व्यवहार को अपनाता चला जा रहा है। जिससे आज मानव का स्वभाव प्रतिद्वन्दिता, ईष्या, द्वेष, और सभी प्रकार से श्रेष्ठ होने के अभिमान से भरा पड़ा है। यहीं कारण है कि प्रेम, भाईचारा, सद्भावना, सहयोग आदि भाव बौने होते जा रहे हैं, और तनाव बढ़ता जा रहा है। इन सब से निजात के लिए शान्ति शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा आतंकवाद, हिंसा, विद्वेष जैसी आवांछनीय घटनाओं के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सके तथा परस्पर सौहार्द्र, सह–अस्तित्व, सहयोग, सहिष्णुता, भाईचारा जैसे सकारात्मक गुण पल्लवित हो सके।[6] शान्ति के बारे में बताते हुये वेदांता सोसाइटी ऑफ सदर्न कैलिफोर्निया, लॉस एंजिल्स के स्वामी स्वाहानंद बतातें है कि, ''अंतर्राष्ट्रीय शान्ति तभी आ सकती है, जब राष्ट्रीय शान्ति हो। और राष्ट्रीय शान्ति तभी होगी, जब वैयक्तिक शान्ति होगी। समाज लोगों के मिलने से बनता है। आज अगर दुनियाँ में अशान्ति है तो इसलिए कि इसमें रहने वालों में अशान्ति है। विश्वशान्ति की शुरूआत हममें से एक और हरेक से होती है। स्थायी शान्ति हासिल करने का एक ही तरीका है कि खुद को अपनी प्रतिकूल भावनाओं से अलग कर लिया जाए और ऐसा अपने अहम को कम करके किया जा सकता है। गीता में कहा गया है, जो व्यक्ति लालसा के बगैर अपनी इच्छाओं से पूरी तरह मुक्त, मैं और मेरा की समझ से दूर रहता है, शान्ति हासिल करता है।''[7] इस प्रकार विभिन्न समस्याओं के निराकरण हेतु जैसा कि गाँधी जी टालस्टाय के इस कथन से अत्यंत प्रभावित हुए थे कि ''हिंसक युद्ध

की तरह अहिंसक युद्ध में भी योद्धाओं का समुचित शिक्षण व प्रशिक्षण होना चाहिए।''[8] शिक्षण, प्रशिक्षण का कार्य वर्तमान में सबसे महत्वपूर्ण औपचारिक संस्थानों को माना जाता है जिसमें प्राथमिक से उच्चस्तर तक की शिक्षा प्रदान की जाती हैं इन संस्थानों में विभिन्न स्तर के विद्यार्थी अध्ययन करतें है। शान्ति योद्धाओं का सृजन हो इसके लिए इसकी शुरूआत हमें बच्चों से करनी चाहिए। जैसा कि गाँधी जी ने कहा था ''यदि हमें विश्व में वास्तविक शान्ति का पाठ पढ़ना है तो इसकी शुरूआत बच्चों से करनी होगी।''[9] विद्यार्थी समाज के अंग है तथा समाज में रहतें है और सामाजिक परिवर्तन अनवरत प्रक्रिया है। चूकि जॉन डीवी महोदय ने जैसा कहा है कि 'विद्यालय समाज का लघु रूप है।'[10] इस लिए समाज का प्रभाव विद्यालय पर भी पड़ना अपेक्षित है। यह परिवर्तन संघर्ष को जन्म देती हैं इससे प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित होता है चाहे वह किसी स्तर का विद्यार्थी हो। इस कारण से प्राथमिक स्तर से उच्चतर स्तर तक शान्ति शिक्षा प्रतीत होती है। दूसरा यह कि प्राथमिक, माध्यमिक व उच्चस्तर तक विद्यार्थियों की नामांकन दरें अधोगामी देखी गयी है। जो विद्यार्थी प्राथमिक स्तर के बाद विद्यालय छोड़ देता है वह शान्ति शिक्षा से वंचित रह जायेगा। चूँकि प्राथमिक स्तर पर बालक का जितना विकास होता है वह अगले कई वर्षो की अपेक्षा अधिक होता है। जैसा कि न्यूमैन ने कहा भी है कि 'पाँच वर्ष की अवस्था शरीर तथा मस्तिष्क के लिए बड़ी ग्रहणशील होती है।'[11] तथा आगे फ्रायड महोदय बच्चों के भविष्य के बारे में कहतें हुये कहे है कि 'मनुष्य को जो कुछ भी बनना होता है, वह चार–पाँच वर्षो में बन जाता है।'[12] इस परिप्रेक्ष्य में प्राथमिक स्तर से ही शान्ति का पाठ पढ़ा कर बच्चों को शान्ति दूत बनाया जा सकता है। ड्राप आउट की समस्या माध्यमिक स्तर पर भी आती है। माध्यमिक स्तर तक आते–आते बच्चा किशोरावस्था में लगभग पहुँच आता है और यह अवस्था जैसा कि स्टेनले हॉल ने कहा है कि 'किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तनाव, तूफान तथा विरोध कि अवस्था है।'[13] ऐसे में किशोर को सही दिशा में सही शिक्षा की आवश्यकता होती है। हैडो रिपोर्ट में लिख गया है– 'ग्यारह या बारह वर्ष की आयु में बालक की नसों में ज्वार उठना आरम्भ हो जाता है, इसे किशोरावस्था के नाम से पुकारा जाता है, यदि इस ज्वार का समय रहते उपयोग कर लिया जाये और इसकी शक्ति तथा धारा के साथ–साथ नई यात्रा आरम्भ कर दी जाये तो सफलता प्राप्त की जा सकती है।'[14] अतः बालक को शान्ति की धारा की ओर उन्मुख करके हम समाज में एक नई क्रान्ति ला सकतें है।

उच्चस्तर पर विद्यार्थियों में तार्किक क्षमता व सोचने समझने की योग्यता आ जाती है। परन्तु स्वार्थ, अपनाहित करने व दूसरों के सुख से कष्ट जैसे घटिया सोच घर कर जाती है। अतः ऐसे समय में शान्ति का शिक्षण विद्यार्थियों को सही मार्ग पर ले जा सकता है। इसके साथ–साथ अध्यापक प्रशिक्षण में भी शान्ति शिक्षा को स्थान दिया जाना प्रासंगिक है क्यों कि बच्चे शिक्षको का अनुकरण करतें है। जैसा कि NCERT के आधार पत्र 'शान्ति के लिए शिक्षा' में भी कहा गया है कि ''विद्यार्थियों के लिए अध्यापक आदर्श होतें है अगर अध्यापक का शान्ति के प्रति रूझान नहीं है, तो वे अनजाने में हिंसा का दुष्प्रचार करने में भूमिका निभातें है। कहा जाता है 'जो मैं जानता हूँ वहीं पढ़ाता हूँ और जो मैं हूँ वही सिखाता हूँ।' अध्यापक का पहला उत्तर–दायित्व विद्यार्थियों को एक अच्छा व्यक्ति बनाने में सहायता करना है और अपनी क्षमताओं का संपूर्ण प्रयोग करने के लिए उत्साहित करना है।''[15] एतएव अध्यापक प्रशिक्षण में शान्ति शिक्षा और भी प्रासंगिक हो जाती है। 'शान्ति के लिए शिक्षा, कई मिले–जुले मूल्यों का योग है।'[16] शान्ति के लिए मूल्यों का विकास तथा नैतिकता आवश्यक है। जैसा कि '1882 के शिक्षा आयोग ने नैतिक शिक्षा को पाठ्यचर्या में शामिल करने का जोखिम उठाया था, जिसे 1884 में सरकार ने अव्यवहारिक कहकर खारिज कर दिया था। नैतिक और धार्मिक शिक्षा पर चल रही सोच की दिशा में माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) की रिपार्ट मील का पत्थर साबित हुई। रिपोर्ट में नैतिक शिक्षा की बात कही गयी। विश्व विद्यालय अनुदान आयोग की रिपोर्ट (1962) अधिक आश्वस्त टिप्पणी पेश करती है ''एक राष्ट्रीय आस्था और धर्म संबंधी भारतीय दृष्टि पर आधारित किंतु कठमुल्लापन, कर्मकांड और दिखावों से मुक्त एक राष्ट्रीय जीवन–पद्धति।'[17] शिक्षा आयोग (1964–66) ने 'शिक्षा और राष्ट्र विकास' पर प्रकाश डाला और इस नजरिए से सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा के लिए कोई प्रावधान न होने को पाठ्यचर्या की एक गंभीर कमी बताया।[18] राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने अत्यावश्यक मूल्यों के क्षरण और समाज में बढ़ती कटुता पर अपनी चिंता व्यक्त की। इसने शिक्षा को सामाजिक और नैतिक मूल्यों का संवर्द्धन करने वाले एक ताकतवर औजार के रूप में ढ़ाल देने की वकालत की।[19] शान्ति शिक्षा की प्रासंगिकता को देखते हुये पाठ्यक्रम में शान्ति शिक्षा के सम्मिलित किये जाने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में भी किया गया है। इस प्रकार शिक्षण संस्थानों में प्रत्येक स्तर के विद्यार्थियों के लिए उनके शैक्षिक आयु के अनुरूप पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है। 'पाठ्यक्रम को अंग्रेजी में (Curriculum) शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन शब्द 'क्यूरेर से हुई है। और क्यूरेर का अर्थ है दौड़ना। इस प्रकार से Curriculum का अर्थ होता है, दौड़ का मैदान। जिस प्रकार दौड़ के मैदान में दौड़कर कोई व्यक्ति अपने लक्ष्य तक पहुँचता है उसी प्रकार निश्चित पाठ्यक्रम को पूरा करके शिक्षार्थी निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति करता है।'[20] ठीक इसी प्रकार विभिन्न पाठ्यक्रम में शान्ति शिक्षा को उचित स्थान मिलने से बढ़ रही अशान्ति, हिंसा, अपराध आदि समस्याओं को दूर किया जा सकता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार विश्व व समाज में बढ़ रही अशान्ति को दूर करने में शान्ति शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इसके लिए भावी देश के कर्णधारों को शान्ति का दूत बनाना होगा। अतएव इसकी शुरूआत बच्चों से करनी होगी। जिसके लिए पाठ्यक्रम में शान्ति शिक्षा को शामिल करके किया जा सकता है। इससे प्राथमिक स्तर से लेकर स्नात्कोत्तर स्तर तथा प्रशिक्षणरत अध्यापक शान्तिदूत के रूप में उभर कर सामने आयेंगे। ये विद्यार्थी

समाज में एक नई ऊर्जा के साथ फैल रही अशान्ति को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेगें। इस तरह पाठ्क्रम में शान्ति शिक्षा की प्रासंगिकता अपेक्षित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *नागरथ, राधिका (2015) : शान्ति की तलाश में जिंदगी. नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन दिल्ली. पृष्ठ सं0 11*
2. *कुमार, रविन्द्र तथा किरनलता डंगवाल (2016–17) : मूल्य एवं शान्ति शिक्षा, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन. पृष्ठ सं0 85*
3. *राय, मनोज कुमार (2014) : गाँधी चिंतन में योग और शान्ति, नई दिल्ली. यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन. पृष्ठ सं0 108*
4. *शर्मा, बी. एम, रामकृष्ण दत्त शर्मा तथा सविता शर्मा (2017) : गाँधी दर्शन के विविध आयाम. जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. पृष्ठ सं0 218*
5. *शर्मा, बी. एम, रामकृष्ण दत्त शर्मा तथा सविता शर्मा (2017) : गाँधी दर्शन के विविध आयाम. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. पृष्ठ सं0 225*
6. *गुप्ता, एस.पी. एवं अलका गुप्ता (2015) : भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन. पृष्ठ सं0 574*
7. *नागरथ, राधिका (2015) : शान्ति की तलाश में जिंदगी. नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन दिल्ली. पृष्ठ सं0 93*
8. *गर्ग, पूनम (1995) : गाँधी की विचारधारा पर पश्चिम का प्रभाव. दिल्ली : हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय. पृष्ठ सं0 101*
9. *गार्डिया, आलोक एवं पुष्पेश पाठक, (2010), शान्ति शिक्षा एवं विद्यालयों में शान्ति संस्कृति की अवधारणा, भारतीय आधुनिक शिक्षा अप्रैल, पृष्ठ सं0 46*
10. *मालवीय, राजीव (2010) : शिक्षा दर्शन एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठिभूमि. इलाहाबादः शारदापुस्तक भवन. पृष्ठ सं0 104*
11. *पाठक, पी.डी. (2005) : शिक्षा मनोविज्ञान. आगरा–2 : विनोद पुस्तक मन्दिर पृष्ठ सं0 123*
12. *तदैव*
13. *पाठक, पी.डी. (2005) : शिक्षा मनोविज्ञान. आगरा–2 : विनोद पुस्तक मन्दिर. पृष्ठ सं0 137*
14. *पाठक, पी.डी. (2005) : शिक्षा मनोविज्ञान. आगरा–2 : विनोद पुस्तक मन्दिर. पृष्ठ सं0 142*
15. *एन.सी.ई.आर.टी. आधर पत्र 'शान्ति के लिए शिक्षा' पृष्ठ सं0 10*
16. *एन.सी.ई.आर.टी.राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005. पृष्ठ सं0 70*
17. *एन.सी.ई.आर.टी. आधर पत्र 'शान्ति के लिए शिक्षा' पृष्ठ सं0 07*
18. *तदैव*
19. *एन.सी.ई.आर.टी. आधर पत्र 'शान्ति के लिए शिक्षा' पृष्ठ सं0 08*
20. *विहारी, रमन (2012) : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त. मेरठ : रस्तोगी पब्लिकेशन्स. पृष्ठ सं0 80*